International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 215-216

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 215-216
www.allresearchjournal.com
Received: 13-12-2016
Accepted: 11-01-2017

सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

Correspondence
सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

ज्ञान सिंह मान के साहित्य में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

सुनीता देवी

प्रस्तावना

धर्म–शास्त्र, समाज, विचार, संस्कृति, अर्थ, प्रौद्योगिकी, राज–व्यवस्था, वर्ण, वर्ग सभी की सापेक्षता में यह अपना अस्तित्व ग्रहण करती है। अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ईमानदारी, पवित्रता, आदर्श, इन्द्रिय नियंत्रण, सहानुभूति, शिष्टता, त्याग और तप ये सब नैतिकता के लक्षण हैं। लेकिन समाज में नैतिक मूल्य विघटित हो रहे हैं। दाम्पत्य सम्बंधों में कड़वाहट, अशिष्टता, अनैतिकता आदि ने पांव जमा लिए है। डॉ0 मान के उपन्यास बदलते नैतिक मूल्य का चित्रण करके व्यक्ति को मूल्यों के प्रति सचेत करता है । यही नैतिक युगबोध का कर्त्तव्य है। नैतिकता मनुष्य को जीना सीखाती है। ''नैतिकता एक व्यवहार है– अन्य के प्रति, खासकर जीवों के प्रति ।''[1] एक आदमी की दूसरे आदमी के प्रति सम्मान और मंगल की दृष्टि ही नैतिकता हैं जिसमें कोई भी दूसरा आदमी वस्तु नहीं रह जाता। नैतिक युगबोध कोई जन्मजात गुण नहीं है। समाज में रहकर इसके गुण–धर्म से परिचित हुआ जाता है, दूसरा यह कोई निरपेक्ष मूल्य भी नहीं है। डॉ0 ज्ञानसिंह मान ने धर्म के सत् रूप को अपनाते हुए धार्मिक युगबोध को अपने साहित्य और जीवन में रखा है। एक ओर उन्होंने धार्मिक युगबोध के अन्तर्गत कर्म के महत्व, धार्मिक सद्भाव, धार्मिक उपादेयता को स्वीकार किया है तो, वहीं दूसरी ओर पाखण्डों, आडम्बरों, अंध–विश्वासों, मूर्ति–पूजा आदि का विरोध किया है ताकि मानव को सच्चे धर्म पर चलाया जा सके। उनके उपन्यासों में धार्मिक युगबोध बिखरा पड़ा है।

लेखक ज्ञान सिंह मान के अनुसार मनुष्य अपने कर्मों का फल ही भोगता है। वह पृथ्वी पर आता है, कर्म करता है और चला जाता है। आलोच्य उपन्यास 'बसंत चन्द्रिका' इसी तथ्य को स्पष्ट करता है– ''जीवन का हर क्षण चलायमान है। चाहा अनचाहा कुछ भी पूर्ववत् नहीं रहता । ज्ञानी सब स्थितियों को सुगमता से आत्मसात् करता हुआ वस्तु निष्ठता में भी सत्य पा लेता है। सांसारिक मानसिक प्रवंचना के जीवों के लिए अपनी निजता को तिल–तिल काटकर भी पिपासित ही रह जाना है।''[2] इस प्रकार मान के उपन्यास कर्म के महत्व को स्वीकार करते हुए धार्मिक युगबोध को सार्थक करते हैं।

धर्म आस्था और विश्वास के बल पर ही कायम रहता है। डॉ0 ज्ञानसिंह मान के उपन्यासों के पात्र भी धार्मिक आस्था और मान्यताओं में विश्वास करते हैं तथा रूढ़िगत मान्यताओं का विरोध भी करते हैं। 'अधूरी मूर्तियां' उपन्यास में बाहुबली रवि की पत्नी छाया को प्राप्त करने के लिए मन्दिर में देवी माँ की पूजा करती है। उनकी मान्यता है कि इक्कीस दिन तक उपवास करने से देवी माँ स्वप्न में दर्शन देकर इच्छा वरदान देती है– ''उपवास अवधि पूर्ण होने पर देवी माँ ने मेरी पत्नी को स्वप्न में दर्शन दिए और हमारा आँगन छाया की मधुर किलकारियों से गूंज उठा।''[3] इसी प्रकार 'दीमक और दायरे' उपन्यास की ग्राम वधुएं प्रत्येक पूर्णिमा को मंदिर में पूजा करती है। 'मैली पुतली उजलें धागे' उपन्यास की किरण सभी कार्य ईश्वर को मानकर करती है। 'बसंत चन्द्रिका' उपन्यास की विम्मी को ईश्वर की आलौकिक शक्ति में पूर्ण विश्वास है– ''क्या पूजन क्या अर्जन रे, उस असीम का सुन्दर मंदिर, मेरा लघुतम जीवन रे ।''[4] लेखक आस्थावान है वह मनुष्य में भी ईश्वर के दर्शन करा देता है। 'काले पर्वत गोरे पंख' उपन्यास की विम्मी तो बिन्नी को ही अपना आराध्य मानकर उसकी उपासना करने लगती है। इस प्रकार आलोच्य उपन्यास आस्था, अनास्था के रूप में भी युगबोध को साकार करते हैं।

भारतवर्ष में लम्बे समय तक 'हिन्दु–मुस्लिम, सिक्ख–इसाई आपस में सब भाई–भाई की नीति चलती रही, लेकिन अंग्रेजों की 'फूल डालो और राज करो' की नीति ने भारतवर्ष के लोगों में साम्प्रदायिक भावनाएं भड़का कर विभिन्न धर्मों में टकराव पैदा कर दिया। जिससे अनेक साम्प्रदायिक दलों का उदय हुआ। डॉ0 मान के उपन्यास इसी धार्मिक टकराव की ओर संकेत करते हैं– ''वही पुराना राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का किस्सा, जमीन के टुकड़े के लिए ये लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं।''[5]

इसी प्रकार 'खुले पैरों की बेड़ियां' उपन्यास में साधु–संतों की टोलियां नारे लगाते घूमती है। सभी अपने धर्म को श्रेष्ठ बताना चाहते हैं, जिससे साधु–संतों में प्रतिशोध की भावना भड़क उठती है। इस प्रकार डॉ0 मान के उपन्यास धार्मिक युगबोध के अन्तर्गत विभिन्न धर्मों के टकराव को व्यक्त करते हैं। आज समाज में पाखण्ड का बोलबाला है। धर्म के ठेकेदारों ने ब्राह्यडम्बरों को बढ़ावा दिया है, जिससे धर्म का सच्चा रूप विलुप्त हो गया है। पाखण्डों का विरोध 'मैली पुतली उजले धागे' उपन्यास में दिखाई देता है। जिसमें ईश्वर को ठेंगा दिखाकर एक बाबा रमादेवी को सन्तान प्राप्ति का वरदान देता है और कहता है– ''देखो, जो वरदान आपको दिया गया है, वह आपके पूर्व संचित कर्मों के अनुसार नहीं है, उसे हमारी तपस्या का पुण्य समझो ।''[6] इसी प्रकार 'खुले पैरों की बेड़ियां' उपन्यास में ढोंगी बाबा का पर्दाफाश किया जाता है। लेखक ने समाज में पनप रहे पाखण्डी बाबाओं की हर्कतों को उजागर करके धार्मिक युगबोध का परिचय दिया है।

देश में धर्म के नाम पर दुराचार राजनीति, संघर्ष और ईर्ष्या पनप रही है। संत महात्माओं के हृदय के भी अपने अहम् की महत्ता है और धर्म के प्रति सात्विक भावना नहीं रही ळें 'खुले पैरों की बेड़ियां' का वसुमित्र साधु होते हुए भी राजनीति में हाथ अजमाना चाहता है। चुनाव के समय देश में 'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो' जैसे नारे गुंजते हैं– ''हर की पौड़ी पर ब्रह्म–मुहूर्त के अवसर पर सबसे पहले किस अखाड़े के साधुओं को स्नान का अधिकार है, बस इसी प्रश्न को लेकर मुठभेड़ शुरू हुई।''[7] इस प्रकार ज्ञानसिंह मान के उपन्यास धार्मिक कट्टरता, महन्तों के बीच संघर्ष के विभिन्न प्रसंगों में धर्म की राजनीति को उद्घाटित करता है। उन्होंने दिखाया है कि आज किस प्रकार देश के धार्मिक स्थलों पर ही राजनीति का बोलबाला हो गया है। यही धार्मिक युगबोध है।

वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक विकास और सामाजिक विकास की असमान गति और विसंगतियों से सामाजिक मान्यताएँ क्षीण हो रही है और सांस्कृतिक मूल्य विश्रंखलित हो रहे हैं। सांस्कृतिक लक्ष्यों और साधनों में धुँधलापन आ रहा है। हमने सद्भाव, सत्य और ईमान को त्याग दिया है। हमारी आकाक्षाएं और धन–लिप्साएं बढ़ गई है। मदिरा जीवन का अंग बन गई है जिसका वर्णन हम आलोच्य उपन्यासों में देखते हैं। 'एक रथ छः पहिये' के बलराम और अंजू शराब पीते हैं और उन्मुक्त यौन सम्बन्धों में लिप्त हो जाते हैं– ''शराब की धीमें प्रहारों और दवाई की मादक लहरों में दो प्रेमी एक दूसरे के गले मिले, सामाजिक समस्त नैतिक श्रंखलाओं को तोड़ गए।''[8] 'मैली पुतली उजले धागे' उपन्यास का आलोकनाथ धन कमाने के लिए अवैध हथकंडे अपनाता है तथा अपने दामाद मुनीश से झूठ बोलता है। इस प्रकार समाज में सांस्कृतिक मूल्यों को बदल नैतिकता–अनैतिकता, धर्म–अधर्म, सत्य–असत्य के बीच विभाजक रेखा को समाप्त कर सांस्कृतिक लक्ष्मण रेखा को पार कर लिया है। यही बोध कराना सांस्कृतिक युगबोध है।

पर्व, मेले व त्यौहार संस्कृति का दर्पण होते हैं। इनमें संस्कृति का उदात्त रूप दिखाई देता है। ज्ञानसिंह मान के उपन्यास 'सरकते मील पत्थर' में पात्र कुल्लु का दशहरा देखने के लिए रूकते हैं। सपना के शब्दों में– ''कुल्लु का दशहरा भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अनुभव है।''[9] 'जलते कलश' उपन्यास में बसंत पंचमी के मैले का उल्लेख बड़े स्याने सोकत से किया है– ''बसंत पंचमी का पुण्य पर्व कितना आनंदमयी होता है, पंजाब के सांस्कृतिक उन्नयन की कैसी सजीली गाथा है यह– धरती फिर से नवेली दुल्हन का दुकूल ओढ़ लेती है।''[10] इस प्रकार डॉ0 ज्ञानसिंह मान के उपन्यासों में पर्व, मेले व त्यौहार के रूप में सांस्कृतिक युगबोध जीवंत हो उठा है।

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज समाज में नैतिक मूल्यों का विघटन हो रहा है। दाम्पत्य सम्बंधों में कड़वाहट पैदा हो गई है। गुरु–शिष्य के सम्बंधों में कामुक प्रेम ने घर कर लिया है। शिष्टाचार–अशिष्टाचार में बदल गया है। बच्चे अभिभावकों के प्रति अनैतिकता का व्यवहार करते हैं। राजनेता भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। 'काले पर्वत गोरे पंख' उपन्यास का पात्र विवेक कह उठता है– ''मैच फिक्सिंग के घोटाले में देश–विदेश के बड़े नेता तथा पूंजीपति संलिप्त है।''[11] धर्म के नाम पर राजनीति होने लगी है। इस प्रकार भ्रष्टाचार, अवसरवाद, कामुकता, असहयोग, अपराध, अत्याचार, गुण्डागर्दी, स्थायीयता जैसे अनैतिक कार्य को बढ़ावा मिल रहा है। आलोकनाथ द्वारा लड़कियों के होस्टल के सामने 'देशी शराब का ठेका खुलवाना गुण्डागुर्दी को बढ़ावा नहीं तो क्या नैतिक कार्य हैं? डा0 मान के उपन्यास विघटित होते नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत है।

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों के अन्तर्गत आदर्शवाद का उच्च स्थान है। डॉ0 मान ने भी अपने उपन्यासों में आदर्शवाद का वर्णन करके जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी है ताकि नैतिक युगबोध का विकास हो सके। 'मृग तृष्णा' उपन्यास की रेखा धनी पिता की सन्तान होते हुए भी गरीब लोगों की बस्ती में जाकर सहायता करती है– ''रेखा धनी पिता की सन्तान होकर भी एन. सी.सी. की साधारण वर्दी में निस्वार्थ भाव से सेवा कर रही थी।''[12] इस प्रकार 'जलते कलश' उपन्यास का प्रदीप अपनी नौकरी की प्रवाह न करते हुए मजदूरों का साथ देकर आदर्शवाद का परिचय देता है। 'तैरते पत्थर डूबते साये' उपन्यास में आदर्श नारी का जीवन दिखाई देता है– ''सर, नारी जीवन में केवल एक ही बार पुरूष के सम्मुख अपने सम्पूर्ण नारीत्व सहित आत्म समर्पण करती है।''[13] 'बसंत चन्द्रिका' की रोमी अनाथ बच्चों का पालन पोषण करती है। इस प्रकार डा0 ज्ञानसिंह मान ने अपने उपन्यासों में आदर्शवाद की स्थापना करके नैतिक युगबोध के कर्त्तव्य को पूरा किया है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत धर्म और नैतिक मूल्यों सम्बंधी युगबोध डॉ0 ज्ञानसिंह मान के उपन्यासों में सर्वत्र बिखरा पड़ा है। एक ओर जहां धर्म आदर्श रूप है वहीं दूसरी ओर समाज में पनप रहे पाखण्ड, अंधविश्वास, धर्म के नाम पर राजनीति, पूजा–विधान, आस्था–अनास्था, विभिन्न धर्मों में टकराव को युगबोध का विषय बनाया है। इसी प्रकार खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, पर्व, मेले, त्यौहार आदि का वर्णन कर सांस्कृतिक युगबोध का साकार कर दिया है। एक ओर मान के उपन्यास बदलते नैतिक मूल्य, नशे की आदत, कामुक प्रवृत्ति का चित्रण का समाज को युगबोध से अवगत कराते हैं तो दूसरी ओर लेखक शिष्टाचार, आदर्शवाद, देशप्रेम, मानवता, अतिथि सत्कार का वर्णन कर समाज के लोगों को नैतिक मूल्यों से अवगत कराते हैं। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ0 मान के उपन्यासों में धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक युगबोध की सर्वत्र व्याप्ति हुई है।

संधर्व सूची

1. सं0 राजकिशोर, नैतिकता के नए सवाल, पृ0 65
2. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, बसंत चन्द्रिका, पृ0 50
3. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, अधूरी मूर्तियां, पृ0 142
4. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, बसंत चन्द्रिका, पृ0 84
5. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, खुले पैरों की बेड़ियां, पृ0 142
6. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, मैली पुतली उजले धागे, पृ0 30
7. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, खुले पैरों की बेड़ियां, पृ0 29
8. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, एक रथ छः पहिये, पृ0 143
9. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, सरकते मील पत्थर, पृ0 52
10. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, जलते कलश, पृ0 68
11. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, काले पर्वत गोरे पंख, पृ0 35
12. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, मृग तृष्णा, पृ0 71
13. डॉ0 ज्ञानसिंह मान, जलते कलश, पृ0 50